कोरोना वायरस, हमारे वरिष्ठ जन और युवा-आसक्त समाज

मिशेल शिफेलबेन

हाल ही में कोरोना वायरस महामारी के प्रकोप के कारण, मुझे अमेरिकी समाज में हमारे वरिष्ठ जनों के बारे में विचार करने की त्वरित आवश्यकता महसूस हुई है।

मैं उन्हें 'बुज़ुर्ग' के बदले 'वरिष्ठ जन' कहती हूं क्योंकि बुज़ुर्ग का मतलब होता है कमजोर या दुर्बल। वरिष्ठ शब्द का मतलब है वे इन्सान जिनके पास हम सबके साथ साझा करने के लिए अपार ज्ञान, बुद्धि और जीवन का अनुभव है।

"हालांकि कुछ युवा लोग इन वरिष्ठ जनों पर विचार नहीं कर रहे हैं, सावधानियों को हवा में उड़ा रहे हैं, लेकिन ज्यादातर अमेरिकी समाज के सभी तबकों के लोग अब हमारे वरिष्ठ जनों का ध्यान रखते हैं।"

वायरस के संदर्भ में मैं वरिष्ठ जनों को ऐसे लोगों के रूप में परिभाषित करती हूं जो 60 वर्ष से अधिक आयु के हैं, यानी जो उस आयु वर्ग की आरंभिक सीमा पर हैं जिस पर कोरोना वायरस सबसे अधिक प्रभाव डाल सकता है। कोरोना वायरस के कारण हमारे वरिष्ठों पर अधिक ध्यान केन्द्रित हुआ है, जिससे हम उनके बारे में उस तरह से सोचने लगे हैं जैसाकि हम सामूहिक रूप से शायद ही कभी सोचते हैं। यह जागरूकता हमें हमारे समाज के सदस्यों के रूप में वरिष्ठ जनों की भूमिका और उन्हें कैसे सुरक्षित रखा जाए तथा उन्हें नुकसान पहुंचने से कैसे बचाया जाए, इस बारे में विचार करने के लिए प्रेरित करती है।

हालांकि कुछ युवा लोग इन वरिष्ठ जनों के बारे में विचार नहीं कर रहे होंगे, सावधानियों का ध्यान नहीं रखते होंगे, लेकिन ज्यादातर अमेरिकी समाज के सभी तबकों के लोग अब हमारे वरिष्ठ जनों का ध्यान रखते हैं। चाहे माता-पिता हों, या दादा-दादी, चाचा-चाची, या कोई महत्वपूर्ण सहकर्मी या गुरु या मित्र, हम सभी शायद उन वयोवृद्ध लोगों के बारे में सोचते हैं जिनकी हम इस महामारी से बचने में मदद करना चाहते हैं। जैसा कि बहाई शिक्षाओं में कहा गया है, हमें अपने जीवन में उन सभी वरिष्ठ लोगों - और साथ ही अन्य सभी लोगों - के बारे में ऐसे ही विचार करना चाहिए जैसे हम अपने करीबी रिश्तेदारों के बारे में करेंगे:

जिन लोगों से आपका वास्ता है, जब तक वे आपके लिए आपके परिवार के सदस्य की तरह न बन जाएं तब तक संतुष्ट न हों। हर किसी को पिता की तरह, या भाई, या बहन, या मां अथवा बच्चे की तरह मानें। अगर आप ऐसा कर पाते हैं तो आपकी मुश्किलें दूर हो जाएंगी, आपको समझेंगे कि क्या करना है। यही बहाउल्लाह की शिक्षा है। - अब्दुल-बहा, *अब्दुल-बहा इन लंदन*

हमारे वरिष्ठ जनों के बारे में विचार करते समय, मैं ज़्यादातर उनके मूल्य और महत्ता पर विचार करती हूं, बजाय इसके कि अमेरिकी समाज उन्हें अपने सामाजिक रूप से निर्मित अनुक्रम में कहां रखता है। आम तौर पर कहें तो अपने युवा-उन्मुख सामाजिक मानदंडों और भौतिकवादी प्रकृति के साथ, हमारी अमेरिकी संस्कृति हमारे वरिष्ठों को उल्लेखनीय महत्व या सम्मान नहीं देती।

"यदि आप हाल का एक उदाहरण देखना चाहते हैं तो बस "ओके, बूमर" मानसिकता पर ध्यान दें"

मैं एक सामान्य बात बोल रही हूं क्योंकि निस्संदेह अमेरिकी समाज में ऐसे भी व्यक्ति, परिवार और छोटे-छोटे समाज हैं जो अपने वरिष्ठ लोगों को महत्व देते हैं, उनके दृष्टिकोण, अनुभव और ज्ञान के प्रति बहुत सम्मान की भावना रखते हैं। इन परिस्थितियों में, वरिष्ठों को समग्रता के हिस्से के रूप में देखा जाता है - एक ऐसे मूल्य के रूप में जो उन्हें मार्गदर्शन और अंतर्दृष्टि की तलाश करने के लिए प्रेरित करता है।

लेकिन आम तौर पर अमेरिकी समाज हमेशा इस तरह से काम नहीं करता। बल्कि वह वरिष्ठ लोगों के बजाय युवाओं को प्राथमिकता देता है और इसलिए ज्ञान और अर्जित अनुभव को कम महत्व देता है। यदि आप हाल ही का उदाहरण देखना चाहते हैं तो बस "ओके बूमर" मानसिकता पर ध्यान दें, जिसमें एक ऐसे नारे का उपयोग किया गया है जो पूरी पुरानी पीढ़ी के विचारों और राय का मज़ाक उड़ाता है और उन्हें खारिज करता है।

निस्संदेह, अपने शुरुआती उपनिवेशवाद के कारण संयुक्त राज्य अमेरिका एक श्वेत-प्रधान, मुख्य रूप से पुरुष प्रधान, युवा-प्रेरित और भौतिकवादी समाज है। क्या आपको संदेह है? यदि हां तो चंद उदाहरणों के रूप में टीवी कार्यक्रमों, फिल्मों, निगमों और व्यवसायों के प्रमुखों पर और अधिक ध्यान दें। बहाई शिक्षाओं के अनुसार,

मानव इतिहास के इस समय में हम आध्यात्मिक पहलुओं के बजाय जीवन के भौतिक पहलुओं पर मुख्य रूप से ध्यान केंद्रित करते हैं:

प्रेम मनुष्य के लिए परमात्मा के उद्देश्य का मूल सिद्धांत है, और उसने हमें एक दूसरे से वैसे ही प्रेम करने की आज्ञा दी है जैसेकि वह हमसे प्रेम करता है। ये सभी मतभेद और विवाद जो हम हर तरफ से सुनते हैं वे केवल भौतिकता को बढ़ाने की ओर प्रवृत्त हैं।

यह दुनिया ज्यादातर भौतिकवाद में निमग्न है और 'पवित्र चेतना' के आशीर्वाद की अनदेखी की गई है। सच्ची आध्यात्मिक भावना का अभाव है, और दुनिया की प्रगति अधिकांशतः केवल भौतिक है। मनुष्य नाशवान जानवरों की तरह होते जा रहे हैं क्योंकि हम जानते हैं कि उनमें कोई आध्यात्मिक भावना नहीं है - वे ईश्वर की ओर उन्मुख नहीं होते, उनका कोई धर्म नहीं है! ये विशेषताएं केवल मनुष्य की हैं और यदि वह इन विशेषताओं से रहित है तो वह प्रकृति का कैदी है और किसी जानवर से बेहतर नहीं है। - अब्दुल-बहा, *पेरिस टॉक्स*

हालांकि यह हमेशा मेरे परिदृश्य में रहा है, लेकिन जैसे-जैसे मेरी उम्र बढ़ रही है, खास तौर पर एक महिला के रूप में, तो यह तथ्य मेरे लिए उतना ही स्पष्ट होता जा रहा है। हमारे वरिष्ठ जनों का अवमूल्यन और उन्हें कम करके आंकना - यह बात मेरे लिए अब और भी स्पष्ट होती जाती है। ज़्यादातर वरिष्ठ लोग भी इस बात की पुष्टि करेंगे। मुझे व्यक्तिगत रूप से यह दिलचस्प लगता है, खासकर जब मैं उन दृष्टिकोणों को समझने लगी हूं जिन्हें आप उम्र बढ़ने के साथ ही समझ सकते हैं।

हम जानते हैं कि अमेरिकी समाज में आम तौर पर युवावस्था + सुंदरता = शक्ति है। यह सदियों से सच रहा है। बेशक, सुंदरता की परिभाषाएं अलग-अलग हैं, साथ ही इसके भी कारण अलग-अलग हैं कि कुछ वयोवृद्ध लोग समाज में ज़्यादा भूमिका क्यों निभा पाते हैं। उदाहरण के लिए, आजकल प्रमुख भूमिकाओं में ज़्यादातर वयोवृद्ध लोग श्वेत पुरुष हैं - जिनमें फ़ॉर्च्यून 500 के मुख्य कार्यकारी अधिकारियों (सीईओ) की भारी संख्या शामिल है - और उनकी वरिष्ठ स्थिति का मतलब केवल यह हो सकता है कि वे एक समय में वे उसी पद पर कम उम्र में थे। कुछ महिलाएं ऐसी भी होती हैं जो युवा और सुंदर नहीं होती हैं, लेकिन यह सामान्य बात नहीं है।

शायद इन सभी परिदृश्यों को बदलने के लिए एक वैश्विक महामारी की आवश्यकता होगी - ताकि हम अपने वरिष्ठ जनों द्वारा दिए जा सकने वाले प्रबल और गहन योगदान के बारे में अधिक जागरूक हो सकेंगे।